Impact Factor-8.575 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refreed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

January-2023

(CCCLXXXIII) 383-B

स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी भाषा, साहित्य, फिल्म और पत्रकारिता का योगदान

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Executive Editor
Dr. M.N. Kolpuke
Principal
Maharashtra Mahavidyalaya,
Nilanga Dist. Latur

Editor
Dr. Govind G. Shivshette
Department of Hindi,
Maharashtra Mahavidyalaya,
Nilanga Dist. Latur

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

B.Aadhar Peer-Reviewed & Refereed Indexed Multidisciplinary International Research Journal

Impact Factor -(SJIF) -8.575, Issue NO, (CCCLXXXIII) 383- B

ISSN : 2278-9308

January, 2023

स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी काव्य

प्रो. डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर

हिंदी विभागाध्यक्ष कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, शिवाजीनगर, गढी, त. गेवराई जि. बीड

महाराष्ट्र, पिन ४३११४३,मो. ९४०४६४६७६८

भारत माँ को आजाद कराने के लिए कईयों ने अपने प्राणों की आहुती दी है। कईयों ने अपने लाल खोए है। कईयों ने अपने प्राण देश के लिए न्यौछावर किए। तब जाकर मिली है यह आजादी। आजादी के लिए जिस तरह हत्यार और तलवारे चली है उसी तरह रचनाकारों ने भी अपनी कलम के माध्यम से देश को आजाद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कलम और तलवार दोनों में तेज धार होती है तथा दोनों से ही जंग लडी जा सकती है। साधारण सा दिखनेवाली कलम तलवार से छोटी जरूर है पर कलम की शक्ति तलवार से अधिक हैं क्योंकि कलम की शक्ति स्थायी और अपराजेय है। कलम की क्षमता उन चीजों को पूरा करने की होती है जो एक शक्तिशाली धार वाली तलवार नहीं कर सकती। कलम तलवार से प्रबल और ताकतवर होती है। कलम और तलवार में एक समानता यह है कि दोनों में भी समाज में बदलाव लाने की क्षमता होती है। भारतीय साहित्यकारों ने अपनी कलम की माध्यम से देशवासियों के दिलों में आजादी के लिए देश प्रेम की भावना जगाकर उन्हें प्रेरित एवं प्रोत्साहित किया है। इसमें हिंदी साहित्यकारों ने भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना को रचनाकोरों ने कुट–कुट कर भरा है। हिंदी साहित्य की अनेक विधाओं में राष्ट्रीय भावना को निरूपित किया है। खासकर हिंदी काव्य में राष्ट्रीय भावना उभरकर सामने आयी है। हिंदी कविताओं में राष्ट्रप्रेम,त्याग, बलिदान, आत्मसमर्पण की भावना को उजागर किया है। अतित का गौरवगाण और वर्तमान की दूर्दशा को चित्रित कर भारतीयों के मन में राष्ट्रीय भावना को जागृत कर आजादी के लिए संघर्ष को अनिवार्य बतलाते हुए बलिदानों, कुर्बानियों की आहुतियों के उदाहरणों के साथ देशभक्ति की ज्वाला प्रज्वलित करने का काम हिंदी कवियों ने भी बखूबी निभाया है। यहा तक की भडकाऊ भाषण देकर जेल भी गए है। जेल में रहकर भी राष्ट्रीय भावाना को जागृत करने का काम निरंतर करते रहे।

हिंदी साहित्य में एक से बढकर एक दिग्गज देशभक्त कवि पैदा हुए है। देशप्रेम की भावना ही काव्यगत राष्ट्रीय चेतना का केंद्र बिंदू है। माखनलाल चतुर्वेदी जी की पुष्प की अभिलाषा और वीरव्रती, मैथिलीशरण गुप्त जी की भूमि भाग्य–सा, भारतवर्ष, मातृभूमि, भारत–भारती, मेरे प्यारे देश, मंगलमूर्ति तिरंगा, प्यारा, तो सुभद्राकुमारी चौहान की झांसी की रानी आदि कविताओं के माध्यम से राष्ट्रीय भावना को उजागर किया है। डॉ. बलदेव के काव्य में राष्ट्रीय चेतना का स्वर दिखाई देता है। हिंदी बाल कविताओं में राष्ट्रीय चेतना देखने को मिलती है। डॉ. श्रीप्रसाद, प्रशांत अग्निहोत्री, डॉ. नागेश पांडेय, विमला जोशी, सोहनलाल व्दिवेदी, डॉ. मित्रेशकुमार गुप्त, प्रभाष मिश्र, रमेशचंद्र पंत, आदि कवियों के कविताओं में बालकों के मन में देशभक्ति की भावना का बीजारोपण करना और उन्हें आत्मनिर्भर बनने के भावना को विकसित करने का काम किया है। देशबंधु शाहजहॉपुरी की बाल कविताओं में राष्ट्रीय भावना मुखरीत हुई है। देश की आजादी के लिए दिए गए बलिदान की याद दिलाते हुए वे लिखते है कि

पंद्रह अगस्त आया है फिर से,
लेकर खुशियों का उपहार।
बलिदानों के गीतों से अब,
गूँज उठे ये गगन अपार। १

हिंदी साहित्य में एक से बढकर एक दिग्गज दे ाभक्त कवि पैदा हुए है। दे । प्रेम की भावना ही काव्यगत राश्ट्रीय चेतना का केंद्र बिंदू है। माखनलाल चतुर्वेदी जी की 'भूमि भाग्य–सा', 'पुश्प की अभिलाशा' और 'वीरव्रती' मैथिली रण गुप्त जी की 'प्रणति', 'हिमालय', 'भारतवर्श, 'मातृभूमि', 'भारत–भारती' रामधारी सिंह दिनकर जी की 'मेरे प्यारे दे । मंगलमूर्ति तिरंगा प्यारा', तो सुभद्राकुमारी चौहान की 'झांसी की रानी'

B.Aadhar' Peer-Reviewed & Refereed Indexed Multidisciplinary International Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -8.575, Issue NO, (CCCLXXXIII) 383- B
ISSN : 2278-9308
January, 2023

आदि कविताओं के माध्यम से राश्ट्रीय भावना को उजागर करने का प्रयास किया गया है।

अंग्रेज सरकार के प्रति आको ा एवं विद्रोह का स्वर दिखाई देता है। राश्ट्र के प्रति स्नेह, प्रेम को जागृत किया है। सत्याग्रह के प्रति आस्था और बलिदान की भावना को पनपाने का काम किया है। सत्ता में बैठे स्वार्थी और पदलोलुप लोगों को ताने देकर उनकी निश्कियता को कियाि ालता में बदलने हेतु भरकस प्रयास अपनी कविताओं के माध्यम से किया है। दे ाभक्ति और राश्ट्रीय चेतना इन कवियों के काव्य का मानो मूल उदे य ही रहा है।

राश्ट्रकवि माखनलाल चुर्तवेदी जी आजादी क लिए बेहद चिंतित रहते थे। उन्होंने भारतीयों के मन में आजादी की चिनगारी को जलाने को काम अपनी कविताओं के माध्यम से किया है। आजादी के लिए न केवल लेखन किया बल्कि उन्होने कई भडकाउ भाशण भी दिए जिसके फलस्वरूप उन्हें बिलासपूर जेल में भेजा गया । वे वहां भी चूप नहीं बैठे अपनी कविताओं के माध्यम से दे ाप्रेम और राश्ट्रप्रेम की भावना को निरंतर जागृत रखा। इसी जेल में उन्होंने 'पुश्प की अभिलाशा' यह कविता लिखी है।

चाह नहीं मैं सुरबालाके, गहनों में गूथा जाऊ
चाह नहीं, प्रेमी माला में, विध प्यारी को ललचाऊ
चाह नहीं, सम्राटों के भाव, पर हे हरि डाला जाऊ
चाह नहीं, देवों के सिर पर, चढू भाग्य पर इठलाऊ
मुझे तोड लेना वनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक
मातृभूमि पर भी ा चढाने जिस पथ पर जावें वीर अनेक।[2]

विदे ी भोशण और अत्याचार के खिलाफ लढकर ही आजादी को प्राप्त करना था इसके खिलाफ नवयुवको के मन में अंग्रेजों के प्रति लढने का मादा पैदा किया साथ ही व्यक्ति के ह्रदय में यह ज्वाला धधकने का भी काम किया जिसके ह्रदय में यह ज्वाला न धधके तो वो कैसा भारतीय है? उसका जीवन निरर्थक है वह मृत सदृ य है।

व्दार बलि का खोल
चल भुडोल कर दे
एक हिम–गिरि एक सिर
एक मोल कर दे,
मसलकर अपने इरादोंसे उठाकर,
दो हथैली हैं कि
पृथ्वी गोल कर दें
रक्त है या है नसों में क्षुद्र पानी
जांच कर, तू सीस दे–देकर जवानी।[3]

भारत की आजादी के लिए लढ रहे वीरों का हौसलाफजाई करने हेतु यह कविता लिखी है। उनके कविताओं में बलिदान, त्याग समर्पण विद्रोह, दे ाप्रेम, दे ाभक्ति, गांधीवादी दृश्टि है। महात्मा गांधी जी के संर्पक में थे लोकमान्य तिलक जी से वे प्रभावित थे। 'पुश्प की अभिलाशा' है कि महान हस्ती के गले में जाना नहीं है और न हीं किसी आभूशणों में इस्तमाल होकर किसी के रूप की भोभा बढाना है। वह तो केवल भाहिद होने के लिए जवान जिस पथ पर से जाते है उस पथ पर फैंकने के लिए कहते है। दे ा के लिए मर मिटने वाले या दे ा पर अपने प्राण न्यौछावर करनेवाले सभी वीरों के प्रिति सम्मान है। दे ाभक्ति का सर्वोपरी और सही स्थान बताते है इस कविता के माध्यम से त्याग और समर्पण का भाव जागृत होता है।

हिंदी साहित्य में व्दिवेदी युगीन कवि मैथिली ारण गुप्त राश्ट्रीय कवि हैं। इनके काव्य में राश्ट्रीय चेतना प्रखार रूप में आई है वे राश्ट्रीय चेतना के प्रबल समर्थक कवि है। राश्ट्रप्रेम के उदात्त विचारों के महानायक कवि कहलाये जाते है। उनके काव्य मे राश्ट्र का गौरवगाण और वर्तमान की दूर्द ाा देखने को मिलती है। उन्होंने अपनी 'भारत–भारती' इस रचना से राश्ट्रीयता का भांखनाद किया। राश्ट्रीय एकता, राश्ट्रप्रेम, और राश्ट्रीय चेतना को हिंदी कविता का प्रमुख विशय बनाने में गुप्त जी का योगदान

सराहनीय है। भारतीय नवयुवकों को आजादी के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए 'भारत–भारती' इस रचना को आधार बनाया है। नवयुवकों के मन में ही नहीं बल्कि सभी मनुश्य के रग–रग में राश्ट्रीय चेतना के स्वर फूंके है। अतिथ का गौरवगाण और वर्तमान की दूर्द ाा से उव्दविंन होकर वे भारतीयों से पूछते है किकृ

हम कौन थे क्या हो गये
और क्या होगे अभी
आओं विचारे बैठकर
ये समस्याऐं सभी।[4]

रामधारी सिंह दिनकर जी ने अपे काव्य में राश्ट्रीय चेतना को न केवल मुखरित किया है बल्कि दे ावासियों में राश्ट्रीयता का भाव जागृत करने में वे सफल हुए। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से जन–मानस में उर्जा का संचार भरने का काम किया है। उनकी अधिकां ा कविताएं राश्ट्रीय चेतना से ओत–प्रोत है। दिनकर के काव्य में राश्ट्रीय चेतना अतीत का गौरव–गान, वर्तमान की दूर्द ाा, कांति की भावना, बलिदान की भावना और एकता की भावना के रूप में उजागर हुई है। जनता जगी हूई है कविता में मुक्ति की बाजी जितने हेतु जीवन को मरण के दॉव पर लगाने के लिए कहते है जैसे किकृ

खेल मरण का खेल, मुक्ति की यह पहली बाजी है।
सिर पर उठा वज्र, ऑखों पर से हरि का अभि ााप,
अग्नि–स्नान के बिना धुलेगा नहीं राश्ट्र का पाप।[5]

दिनकर के काव्य में राश्ट्रीय चेतना अतीत का गौरव–गान, वर्तमान की दूर्द ाा के रूप में व्यक्त हुई है। जैसे कि...

'तू पूछ अवध से राम कहॉ
विद्यापति कवि के गान कहॉ।[6]

सुभद्राकुमारी चौहान राश्ट्रीय चेतना की एक सजग कवियत्री के रूप में जानी जाती है क्योंकि आजादी के लिए उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से भरकस प्रयास किया है। उनका काव्य राश्ट्रीय चेतना से भरा हुआ है। वे झॉसी की रानी इस कविता में दे ा प्रेम की भावना को उजागर किया है। जैसे किकृ

सिंहासन हिल उठे, राजवं ाों ने भुकटी तानी थी,
बूढे भारत में भी आयी फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,
चमक उठी सन सतावन में वह तलवार पूरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लढी मर्दानी वह तो झॉसीवाली रानी थी,।[7]

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

१ डॉ. देशबंधु शाहजहॉपुरी, बाल कविता पंद्रह अगस्त बालवाटिका मासिक पत्रिका, स्वातंत्र्य चेतना अंक , अगस्त २०१५, नंदनभवन कावॉखेडा पार्क, भीलवाडा राजस्थान पृ. संख्या १४
2.हिमकिरीटिनी–पुश की अभिलाशा – माखनलाल चतुर्वेदी पृश्ठ संख्या 27
3. हिमकिरीटिनी–सिपाही – माखनलाल चतुर्वेदी पृश्ठ संख्या 38
4. भारत–भारती वर्तमान खंड– मैथिली ारण गुप्त– पृश्ठ संख्या 10
5. पर ाुराम की प्रतिक्षा– रामधारी सिंह दिनकर पृश्ठ संख्या– 42
6 रेणूका– रामधारी सिंह दिनकर पृश्ठ संख्या– 51
7. सुभद्राकुमारी चौहान का व्यक्तित्व एवं कृतित्व– डॉ. आर. पी. वर्मा पृ. सं.90

20	स्वाधीनता आंदोलन की प्रतिकात्मक नाट्याभिक्ति: अनुशासन पर्व प्रा. डॉ. धीरज जनार्धन व्हत्ते	73
21	भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में राष्ट्रभक्तिपरक गीतों का योगदान डॉ. करिश्मा अय्युब पठाण	78
22	पं.रामनरेश त्रिपाठी की कविता 'वह देश कौन-सा है?' में स्वदेश प्रेम डॉ.सुनील गुलाबसिंग जाधव	82
23	स्वाधीनता आंदोलन और सुभद्राकुमारी चौहान डॉ.वडचकर शिवाजी	86
24	घुमक्कड़ राहुल सांकृत्यायन डॉ गोविन्द पांडव	89
25	कवि प्रदीपजी का स्वाधीनता आंदोलन मे योगदान प्रो.डॉ.राजश्री भामरे	93
26	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य प्रा. माधवराव गजाननराव जोशी	98
27	चंद्रगुप्त नाटक में युग चेतना प्रो डॉ.ज्ञानेश्वर गाडे	103
28	स्वाधीनता आंदोलन और महाप्राण निराला का काव्य डॉ. केशव क्षिरसागर	106
29	स्वाधीनता आंदोलन और कवि माखनलाल चतुर्वेदी। डॉ विलास तुकाराम राठोड	110
30	स्वाधीनता आंदोलन का दहकता दस्तावेज माखनलाल चतुर्वेदी का काव्य प्रा.डॉ. भगवान रामकिशन कदम	114
31	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी काव्य प्रो. डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर	118
32	स्वाधीनता आंदोलन और यशपाल का औपन्यासिक साहित्य प्रा.डॉ. एकलारे चंद्रकांत नरसप्पा	121
33	स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी के पत्र-पत्रिकाओं का योगदान... डॉ. प्रकाश भगवानराव शिंदे	124
34	अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल और स्वाधीनता चेतना प्रा. डॉ. लुटे मारोती भारतराव	129
35	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी फिल्म डॉ.ज्योति संभाजीराव मुंगल	133
36	स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी साहित्यकारों का योगदान डॉ. संतोष सुभाषराव कुलकर्णी	138
37	स्वाधीनता आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में प्रेमचंद के उपन्यासों का योगदान प्रो.डॉ.जानअहेमद के.जे.	143
38	स्वाधीनता आंदोलन में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का योगदान प्रा. डॉ. सुचिता जगन्नाथ गायकवाड	146
39	स्वाधीनता आंदोलन - भारतेन्दु का साहित्य डॉ.रज़ियाशहेनाज़शे.अब्दुल्ला	149
40	स्वाधीनता आन्दोलन में हिंदी फिल्मों का योगदान रजत अभिनव,	153
41	स्वाधीनता का सच्चा स्वर : भारतेंदु हरिश्चंद्र डॉ.मीरा.पी.आई.	158